Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-II FEBRUARY 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

आम्बेडकरवाद और हिंदी दलित साहित्य

डॉ. भानुदास आगेडकर
किसन वीर महाविदयालय, वाई.
जिला. सातारा,महाराष्ट्

आम्बेडकरवादःसामान्य परिचय

भारतीय दर्शनशास्त्र के इतिहास में आम्बेडकरवाद एक ऐसा दार्शनिक सिध्दांत है जिसने पिछले दो शतकों के दार्शनिक प्रवाह में अपनी स्वतंत्र पहचान निर्माण की है । भारतीय दर्शनशास्त्र की परंपरा में वैदिक दर्शन और अवैदीक दर्शन के दो प्रवाह निरंतरता से प्रवाहीत रहे दिखाई देते है । इनमें से वैदिक दर्शन इश्वरवादी और अवैदिक दर्शन निरिश्वर या इहवादी विचारतत्वों का समर्थन करते हुए मानवीय जीवन की व्याख्या करते है। खंडक मंडण पध्दती से यह दोनो दर्शन समय–समय पर एक दुसरे के तात्वीक, सैध्दांतिक मान्यताओं के मूल्यों की स्थापना करते हुए प्रारंभ से ही विकसीत तथा प्रवाहीत हुए दिखाई देते है। भरतीय दर्शनशास्त्र में इनकी संख्या नऊ दी गई है। इन नऊ दर्शनों मे से छः वैदिक दर्शन और तीन अवैदिक दर्शन रहे है। चार्वाक, जैन और बौध्द यह तीन अवैदिक दर्शन है। इन दो दार्शनिक प्रवाह में प्राचिन काल से अब तक अनेक आचार्यों ने मनुष्य के भौतिक एवं अभौतिक जीवन से सम्बधित ज्यों सैध्दांतिक विचार प्रस्तुत किए है। वह सारे सैध्दांतिक विचार "वाद" माने जाते है। ईश्वर (ब्रम्हा), सृष्टी निर्मिती (जगत) और जीव (मनुष्य) इनके परस्पर संबधों पर हर एक आचार्य ने चाहे वह वैदिक दर्शन का समर्थक हो या अवैदिक उन्होंने अपने सैध्दांतिक मत की चर्चा की है। इस तरह की सैध्दांतिक चर्चा करनेवाले आचार्य को आगे चलकर 'दार्शनिक' और उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए वैचारिक मत अर्थात 'वाद' को दर्शन कहा जाता है। इस तरह के अनेक आचार्यों द्वारा किए गए वैचारिक वाद की दर्शनशास्त्र के इतिहास में समय–समय पर स्थापना हुई दिखाई देती है। प्रस्तुत दर्शनों मे जीव, जगत, ईश्वर (ब्रम्ह) इन प्रमुख तत्वों के साथ साथ आत्मा, पुनःर्जन्म, कर्म सिध्दांत, स्वर्ग–नरक आदि तत्वों के संदर्भ मे भी अपनी अपनी सैध्दांतिक धारनाओं को दर्शनशास्त्र के चौखट में प्रस्तुत किया जाता हुआ दिखाई देता है। इस दृष्टी से देखे तो इनमें से "एक प्रवाह जीव (मनुष्य) और जगत से ज्यादा ईश्वर (ब्रम्हा) पर अधिक विचार करते हुए अपरिवर्तनशील विचारों की स्थापना पुनः पुनः करता हुआ दिखाई देता है। इसके विपरीत निरिश्वरवादी दर्शन जीव और जगत के परिवर्तनशिलता पर चर्चा करते हुए उसके विकास के लिए नए नए सैध्दांतिक विचारों की स्थापना करते है, अर्थात मंडण करते है।'**1** दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में परंपरासे चले आए इसी मत मतातरों को मराठी भाषा मे वाद–विवाद कहा जाता है। मराठी भाषा में प्रचलित इसी सैध्दांतिक विचार प्रणाली को "वाद" भी कहा गया है जो दार्शनिक क्षेत्र में स्थापित किसी न किसी दार्शनिक विचार का अर्थ संकेत देता है। आम्बेडकरवाद उसीका प्रतिक है। अतः कहना न होगा कि इसमें डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी द्वारा अपने पूरे जीवन में जीव (मनुष्य) और जगत के भौतिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन करने के लिए समय–समय पर दिए गए भाषणों,किए–गए आंदोलनों और लिखे गए साहित्य सामग्री के माध्यम से प्रस्तुत किए गए सैध्दांतिक विचार ही आम्बंडकरवाद है। अर्थात स्वतंत्र भारत के शिल्पकार डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकरजी द्वारा अपने पूरे जीवनकाल में मानव मुक्ति के लिए जो आंदोलन खडे किए थे, भौतिक जीवन जिनेवाले हर एक व्यक्ति को समता, स्वातंत्र्य, बंधुता और न्याय का संविधानिक अधिकर देने के लिए जो वैचारिक संघर्ष किए थे, उन्ही आंदोलनो और वैचारिक संघर्ष का सारांश है– आम्बेडकर वाद। अर्थात डॉ बाबासाहब आम्बेडकर जी ने अपने पूरे जीवन काल में मानव मुक्ति के लिए जिन मूल्याधारित मतों

की,विचारों की चर्चा समय–समय पर अपनी वाणी और लेखणी द्वारा प्रस्तुत की है। वह सारी उपलब्ध सामग्री आज के तत्वचिंतन के क्षेत्र में अर्थात दर्शनशास्त्र के क्षेत्र मे आम्बेडकरवाद शिर्षक द्वारा स्थापित हो चुकी है।

आम्बेडकरवाद : सैध्दांतिक मूल्य

दर्शनशास्त्र के मापदंडों के अनुसार जीव, जगत, ब्रम्ह (इश्वर), आत्मा, परमात्मा, पुनःर्जन्म, स्वर्ग, नरक, कर्मसिध्दांत आदि संबंधी विचार सैध्दांतिक दृष्टी से प्रस्तुत करनेवाली विचार प्रणाली 'वाद' का स्वरूप धारण करती है। परंतु इस तरह की सैध्दांतिक विचारों की स्थापना अस क्षेत्र में कार्यरत असामान्य महनीय व्यक्ति ही कर सकता है न की कोई साधारण व्यक्ति क्योंकी किसी तत्वज्ञानात्मक दर्शन पर उसकी स्थापना करनेवाले तत्वज्ञ अर्थात दार्शनिक के व्यक्तित्व का प्रभाव पडता है। उसके आस–पास रहे स्थिती का उस समय के राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक परिवेश का उस पर प्रभाव रहता है। इस तरह की सैध्दांतिक विचार प्रणाली किसी विशिष्ट कालखंडमें भले ही निर्माण होती है। मगर उसमें और उसके निर्माता में नेतृत्व करने का सामर्थ्य रहता है। यही कारण है कि मराठी 'वाद' शब्द के अंग्रेजी 'इझम' शब्द की व्याख्या –"any distinctive doctrine or practice" की जाती है। डॉ. यशवंत मनोहर जी के अनुसार "इझम अर्थात ISM अर्थात system set of co-ordinated doctrines. 'वाद' का मतलब एक विविक्षित तत्वव्यूह। इस तत्वव्यूह के अलग–अलग भागों की सुव्यवस्थित रचना करना – वाद है। एक सुत्र में बांधा गया एक पूर्ण तथा सुसंगत विचारविकल्प ही 'वाद' है।"**2** इस व्याख्या के अनुसार 'वाद' एक सुसंगत विचार विकल्प है जिसमें मानविय जीवन की वास्तविकता पर विचार किया गया है। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी द्वारा समय–समय पर प्रस्तुत किए गए सभी विचार इस व्याख्या के अनुसार 'वाद' अर्थात'इझम' की कसौटी पर खरा उतरते हुए दिखाई देते है। क्योंकि आम्बेडकर वाद में भारतीय वर्णवादी समाजव्यवस्था से लेकर राजनीतिक,धार्मिक,सामाजिक,आर्थिक,सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों सही मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन तक की भौतिक समस्याओं का निराकरण करनेवाले सैध्दांतिक उपचारों की स्थापना की हुई दिखाई देती है। अर्थात इस विचार प्रणाली में संपूर्ण मानवजाती के हित और मंगल कामना के तत्वों की स्थापना की हुई दिखई देती है। यह सच है कि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी ने समय–समय पर तथा अलग–अलग माध्यमों द्वारा ज्यों ज्यों विचार प्रस्तुत किए है वह सारे विचार अखील मानवजाती के उध्दार और विकास तथा भविष्य निर्माण के लिए मार्गदर्शन करलेवाले सैध्दांतिक विचार है। प्रचलित विषमतावादी भारतीय समाजव्यवस्था में समता, स्वातंत्र्य, बंधुता और न्याय के साथ साथ समताधिष्ठित समाज की निर्मिती के लिए खुन का एक कतरा भी न बहाते हुए समाज की पुनःर्रचना करना, धर्मनिरपेक्षता, एक व्यक्ति एक मूल्य, सर्वधर्मसमभाव जैसे अनेक सद्मुल्यों की स्थापना करनेवाले डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी के यह तात्वीक विचार प्रा. दामोदर मोरे जी के अनुसार आम्बेडकरवाद है। उनके अनुसार "आम्बेडकरवाद–बीसवीं सदी का आगे की सदियों को उजाला देनेवाला एक दर्शन है।"**3** इसमें डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी ने दर्शनशास्त्र में निश्चित किए गए अप्राकृत सैध्दांतिक मूल्य अर्थात जीव, जगत ब्रम्हा (ईष्वर) आत्मा, परमात्मा, पुनःर्जन्म, कर्मसिध्दांत आदि पर अपने प्रखर एवं प्रगट विचार प्रस्तुत करके इस क्षेत्र में नए सैध्दांतिक मूल्यों की स्थापना करते हुए आधुनिक युग के एक सशक्त दार्शनिक होने का प्रमाण भी दिया है। उनका प्रगल्भ व्यक्तिगत, सशक्त वैचारिकता, गहन चिंतनशिलता अभ्यासपूर्ण कृतिशिलता और महामानव के व्यक्तिमत्व का प्रतिबिंब आम्बेडकरवादी सैध्दांतिक, दार्शनिक विचार प्रणाली में एक युगदृष्टा दार्शनिक के रूप में प्रतिबिंबित हुआ दिखाई देता है। दर्शनशास्त्र की दृष्टी से देखे तो आज के आधुनिक युग में "आम्बेडकरवाद" एक मात्र ऐसी सैध्दांतिक विचारप्रणाली है जो समता, स्वातंत्र्य, बंधुता और न्याय जैसे नए दार्शनिक मूल्यों के माध्यम से अहिंसात्मक संघर्ष करने की प्रेरणा देते हुए अखिल मानवजाती के दैनंदिन जीवन को सुखमय करने हेतु इहवादी, अनात्मवादी,

निरिश्वरवादी, बुध्दिप्रामण्यवादी, विवेकवादी, विज्ञानवादी, धर्मातीत मानवतावादी वैचारीक मूल्यों की दृष्टी देने का प्रयत्न करता है। इससे यह भलि भॉती स्पष्ट होता हे की नए दार्शनिक मूल्यों की स्थापना करनेवाला आम्बेडकरवाद दार्शनिक परंपरा द्वारा निश्चित किए गए नियमों और मूल्यों के अनुसार एक परिपूर्ण दर्शन है। यह दार्शनिक विचार प्रणाली अवैदिक बौध्द दार्शनिक धारा की अगली कडी के रूप में उपस्थित होती है। क्योंकी यह समता, स्वातंत्र्य, बंधुता और न्याय जैसे सैध्दांतिक मुल्यों के साथ–साथ प्रज्ञा, शील, करूणा, अहिंसा, शांती, प्रेम,मैत्रीभाव,विश्वबंधुत्व जैसे बौध्द दार्शनिक मूल्यों को भी आत्मसात करते हुए समकालिन युग में विवेकवादी व्यक्ति तथा विज्ञानवादी समाज की निर्मिती करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहा दिखाई देता है। यही कारण है कि आज व्यक्ति जीवन में तथा राष्ट्रजीवन के हर एक क्षेत्र में आम्बेडकरवादी विचार प्रणाली तथा उसके दार्शनिक, सैध्दांतिक मूल्यों की चर्चासूक्ष्मता से की जा रही है।

दलित साहित्य : सामान्य परिचय

हिंदी साहित्य क्षेत्र में आजकाल जिस दलित साहित्य का इतना बोलबाला चल रहा है। उसका उद्‌भव मूलतः छटवे– सातवे दशक के मराठी साहित्य में हुआ था। महाराष्ट्र में नामदेव ढसाळ, राजा ढाले, ज.वी.पवार, जैसे विद्रोही युवकों ने साठ सत्तर के दशक में 'दलित पॅथर' नामक दलित युवकों का संगठन किया था। यह संगठन दलित युवकों सहीत पूरे दलित समाज में स्वाभिमानी अस्मिता जागृत करने में साफल हुआ था। दलित पॅथर के इस अस्मिता जागृति अभियान ने महाराष्ट्र में स्थित दलितों के जिवन में एक नयी उर्जा निर्माण की थी। हर क्षेत्र में कार्यरत दलित युवक इस कालखंड में अपने दलितत्व को नकारकर अपने स्वाभिमान के लिए, अपने संविधानिक हक और अधिकार के लिए सामाजिक समानता के लिए, अन्याय के विरूध्द लढने के लिए, आंदोलनात्मक संघर्ष के लिए जागृत हुआ था। यह स्थिति हर एक क्षेत्र की थी। इसी दशक में दलितों में जागृत हुए स्वाभिमान का,उनपर सदियों से किए गए अन्याय–अत्याचार का आक्रोश, अन्यायकारक व्यवस्था को उधवस्त करनेवाला भावनिक विद्रोह युवा साहित्यकारों द्वारा मराठी साहित्य में कथा, कविता के माध्यम से प्रस्तुत होने लगा था। इसे लिखनेवाले युवा साहित्यकार जन्म से अस्पृष्य अर्थात दलित थे। किंतु मराठी साहित्य में दाखील हुआ यह नया प्रवाह एक सैलाब की तरह आया, जिसने सभी को सोचने के लिए मजबुर करते हुए अभिजात मराठी साहित्य क्षेत्र में अपनी स्वतंत्र पहचान निर्माण की थी। मराठी साहित्य क्षेत्र में निर्माण हुआ यह सैलाब आठवे दशक के बाद हिंदी साहित्य क्षेत्र में पहले अनुवाद के रूप में और अब अनुकरण के रूप में दिन प्रतिदिन संपूर्ण हिंदी साहित्य विश्व को ही प्रभावित कर चुका है। आज मराठी के समान हिंदी में भी दलित साहित्य का बोलबाला है। इसका मूल कारण यह है कि यह साहित्य अपने देश के उन करोडो लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो सदियों से जाति और धर्म के नाम पर गुमनाम और पाशविक जीवन जी रहे थे। आज जिसे दलित कहा जाता है, भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था की चौखट में उसे शूद्र, अनार्य, अस्पृश्य, अछूत और हरिजन कहा जाता रहा है। आजकल विद्‌वानों द्‌वारा इसशब्द का अर्थ अधिक व्यापक बनाया गया है। उनके अनुसार मानव का मानव द्‌वारा शोषित रूप दलित है। इसमें सभी लोग आते है जो अन्यायकारक व्यवस्था द्‌वारा रौंदे जाते है। इसके अंतर्गत आजकल अस्पृश्य सहीत मजदूर, किसान और व्यवस्था के पैरों तले कुचले हुए सभी जाती धर्म के लोग समाहीत किए जाते है। इन सभी की संघर्षमय जीवन व्यथा आज जिस सीहत्य के माध्यमसे प्रस्तुत हो रही है उस साहित्य को दलित साहित्य की परीधीमें स्विकारा जाने लगा है। अर्थात ''जो भी साहित्य दलित जीवनानुभव,मूल्यों और बेचैनियों,उत्सकताओं और प्रश्नों को लेकर लिखा जाता है वह दलित साहित्य है।''**4**इसमे प्रयोगीत 'दलित'शब्द की यह अर्थव्यापकता मान्यवरों की दृष्टी से विवादात्मक है। इसी तरह इसके रचनाकारों को लेकर भी बहुत बडा विवाद निरंतरता से चल रहा है। इतने विवादों के बावजुद आज यह स्विकारा गया है कि किसी भी दलित के समाज जीवन से जुडी साहित्यिक रचना

दलित साहित्य है। इसके अतिरिक्त जाति व्यवस्था को नकारनेवाला, शोषित मानव की व्यथा बतानेवाला साहित्य दलित साहित्य कहा जाता है। इसमें सदियों से वर्णव्यवस्था के प्रभाव से ग्रसित भारतीय समाज में सबसें निचले तबके के लोगों पर अर्थात शुद्रों पर, दलितों पर किए गए अन्याय को आक्रोश के साथ व्यक्त किया गया है।''दलित साहित्य आक्रोश,चिख,वेदना,पीडा,चुभन,घुटन और छटपटाहट से युक्त साहित्य को कहते है।''**5** इस तरह मराठी हिंदी सहीत आज तक के अनेक भाषिक आचार्यों ने दलित साहित्य कोसिमीत व्याख्या में बांधने का प्रयास किया है। जिसका सारांश रूप यही है कि दलितों में स्वाभिमान जागृत करनेवाला, अपमानितों को सन्मान दिलानेवाला, शूद्रों को इज्जत देनेवाला,शोषितों को मुक्ति देनेवाला, अबला समाज को सबला बनानेवाला, भेदभावरहीत समाज का निर्माण करनेवाला साहित्य दलित साहित्य है। आम्बेडकरवाद से प्रभावित यह साहित्य समताधिष्ठित नई व्यवस्था की प्रतिष्ठापना का एक सशक्त प्रेरणा स्त्रोत माना जाता है। मेरी दृष्टी में दलित साहित्य की यही सही पहचान है।

हिंदी दलित साहित्य

हिंदी साहित्य क्षेत्र में दलित साहित्य का आगमन असल में मराठी आत्मकथाकार दया पवार द्वारा कथन किए गए 'अछूत' साहित्यकृति से हुआ दिखाई देता है। किंतु कुछ हिंदी आचार्यों का यह मानना है कि सरस्वती पत्रीका में 1964 में छपी 'हीराडोम' कविता हिंदी की पहली दलित रचना है। इसके अतिरिक्त कुछ आचार्यों का यहां तक मानना है कि भक्तिकालिन सिध्द साहित्य के अधिकतर कवि जन्म से शुद्र, दलित होने से उनके द्वारा रचित साहित्य दलित साहित्य ही है। क्योंकी वह रचनाए दलित जीवन से जुडी हुई दिखाई देती है। इन सिध्द कवियों के समान भक्तिकालिन अनेक निर्गुणवादी संत कवियों ने समकालिन समाज में फैले दुराचार, जातिव्यवस्था, उच–निचता का कडा विरोध करते हुए अपनी काव्यात्मक रचनाओं को प्रस्तुत करके क्रांतीकारी परिवर्तन करने का प्रयास किया था। जो प्रयास आज के दलित साहित्य का प्रमुख प्रयोजन है। अगर इस बात को स्वीकारा जाए तो हिंदी साहित्य के क्षेत्र में दलित साहित्य लिखनेवाले साहित्यकारों की लंबी परंपरा रही दिखाई देती है। आज हिंदी साहित्य क्षेत्र में दलित साहित्य ने अपनी एक अलगसी पहचान निर्माण की है। इस पहचान का मूल स्त्रोत आम्बेडकरवाद है। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी के क्रांतीकारी विचार इस साहित्य का प्राण तत्व है। तथा स्वयं डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर इस साहित्य के जनक है। उनके विचारों को आत्मसात करके अब तक लिखे गए हिंदी दलित साहित्य का संक्षेपात्मक परिचय आगे प्रस्तुत करते है। जैसे–

हिंदी दलित कथा साहित्य

हिंदी दलित साहित्यकार अपने भोगे हुए यथार्थ को वाणी देकर अपनी रचनाओं में स्वानुभूती की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि अधिकतर समीक्षकों को उन्ही रचनाओं में दलित चेतना, दलित वेदना अधिक सजिव और तीव्र महसूस होती है जो रचनाकार जन्म से दलित है। वैस देखा जाए तो अनुभूती और स्वानुभूती में फर्क तो होता ही है। इसी बात को स्वीकारकर समीक्षों द्वारा दलित साहित्य की पहचान आज भी हो रही है। मगर समीक्षकों के इस मापदंड को छोडकर आज अनेक दलित गैरदलित रचनाकारों ने हिंदी साहित्य क्षेत्र में प्रचलित सभी साहित्यिक विधाओं में सैकडो रचनाओं की निर्मित की हुई दिखाई देती है। मराठी साहित्य की तरह आज के वर्तमान हिंदी साहित्य में दलित साहित्य एक सैलाब की तरह ही निर्माण हो रहा है। सैलाब, जो परिवर्तनशील और सोचने के लिए मजबुर करता है। हिंदी दलित कथा साहित्य उस सैलाब का साक्षात प्रतिक है। जिसने दलित जीवन की व्यथाएँ, वेदनाएँ, समस्याएँ, आक्रोश और बदलाव के लिए तरसनेवाली उनकी छटपटाहट का परिचय देकर सभी को सोचने के लिए मजबुर किया है। इसमें प्रचलित कहानी और उपन्यास दोनों में रचनाकारों ने दलित जिवन का वास्तव चित्रण प्रस्तुत किया है। ''दोनों में उनका मुख्य मुद्दा उस सामंती वर्ण व्यवस्था के अमानवीय चरित्र का उद्घाटन है जिसने हजारों वर्षों से दलितों को दरकिनार

करके, मानवीय हक से उन्हे वंचित करके अछूत बनाये रखा है। दलितों की व्यथा–कथा से लेकर पुरानी व्यवस्था के प्रति उनका संघर्ष और आक्रोश उनके कथा साहित्य में अभिव्यक्ति पाता है।''**6** उनके पात्र नारकीय वेदना संहन करते हुए डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी के विचारों से प्रभावित होकर क्रांतीकारी परिवर्तन के लिए समता, बंधुता और न्यायपूर्ण हक के लिए संघर्ष करते दिखाई देते है। इसी प्रयोजन को केंद्र में रखकर लिखे गए अनगीनत उपन्यास और कथा संग्रह आज बडी मात्रा में हिंदी साहित्य क्षेत्र में उपलब्ध है। जैसे– ओमप्रकाश वाल्मीकी द्वारा प्रस्तुत "काली रेत", मोहनदास नैमिशराय का ''मुक्तिपर्व'', सत्य प्रकाश का 'जस तस भई सबेरा', अमृतलाल नागर का 'नाच्यौ बहुत गोपाल', जयप्रकाश कर्दम का 'छप्पर', श्रीचंद्र अग्निहोत्री का 'नयी बिसात', बाला दुबे का 'मकान दर मकान' यादवेंद्र शर्मा का 'हजार घोडों का सवार', डॉ अरिगपूडी का 'अभिशाप', राम सुरेश का 'धन्नी फिर लौटेगी', प्रेम कपाडिया का 'मिट्टी की सौगंध', अरूण कुमार का 'दूध का कर्ज', बाबूलाल मधुकर का 'रमरतिया', जगदीशचंद्र के 'धरती धन न अपना', 'नकर कुंड में वास', गिरीराज किशोर का 'यथा प्रस्थापित' मदन दीक्षित का 'मोरी की ईट' आदि । इन प्रमुख उपन्यायों के समान आज दिन प्रतिदिन सैकडो दलित उपन्यास हिंदी में प्रकाशीत हो रहे है। हिंदी कहानी साहित्य भी उपन्यास की तरह हिंदी दलित साहित्य में अपनी स्वतंत्र पहचान एवं स्थान निर्माण कर चुका है। आज कई कहानी संग्रह इस दृष्टी से अपना महत्व उजागर करते हुए दिखाई देते है। जैसे–"सलाम","घुसपैठिये"–ओमप्रकाश वाल्मीकी। "सुरंग"– दयानंद बटोही। "हेरी कब आयेगी"– सूरजपाल।"चार इंच की कलम"– कुसुम वियोगी। "टूटता बहम" – सुशीला टाकभैरे। "हिस्से की रोटी"–शत्रुहन कुमार। "द्रोणाचार्य एक नहीं"– कावेरी। "आधे पर अंत"– विपिन विहारी। "आवाजे", "अपना गाव" – मोहनदास नैमिशराय। "कफन चोर"– दयानंद बटोही। "सांग और चमार"– जयप्रकाश कर्दम। "चतुरी चमार का चाट"– बी.एल्. नैय्यर। इन कथा साहित्य कृतियों दलित गैरदलित लेखकों ने समकालिन दलित जीवन की पीडा को अनुभूती और स्वानुभूती की कसौटी पर दलितों के दैनंदिन जीवन का अतियथार्थ चित्रण किया हुआ दिखाई देता है। हिंदी दलित आत्मकथनों में भी यही यथार्थ स्वानुभूती अत्यंत प्रखरतापूर्ण शैली में कुछ दलित लेखकों ने प्रस्तुत की है। यह आत्मकथन सदियों से संहन किए गए अन्याय–अत्याचार का लेखा जोखा ही है। मानो इन आत्मकथनों में सदियों का संताप आक्रोश बनकर प्रगट हुआ है। इन आत्मकथनों द्वारा दलित लेखकों का प्रगटीकरण आम्बेडकरवाद के प्रभाव का सबसे बडा प्रमाण है क्योंकि आत्मकथन करनेवाला लेखक तमाम विरोधी परिस्थितीयों के साथ संघर्ष करके आगे बढने का संदेश देता है, वह व्यवस्था परिवर्तन की मॉग भी करता है जो आम्बेडकरवाद का प्रमुख प्रयोजन है। हिंदी दलित साहित्य में इस तरह के अनेक प्रयोजनात्मक आत्मकथन उपलब्ध है। जैसे –"अपने–अपने " पिंजडे भाग–1,2– मोहनदास नैमिशराय। "जूठन"– ओमप्रकाश वाल्मीकी।, "मै भंगी हूँ"– भगवानदास। "तिरस्कृत और संतप्त"– सूरजपाल चौहान। " दोहरा अभिशाप"– कौशल्य बैसंत्री। "झोपडी से राजभवन"– माताप्रसाद।, "नागफनी"– रूपनारायण सोनकर । इनके अतिरिक्त भी इसतरह की आत्मकथन रचनाएँ हिंदी में आज प्रकाशीत हो रही है जिनमें व्यक्तिगत, परिवारिक और सामाजिक यातना तथा संघर्ष की गाथा अत्यंत प्रामाणीकता से प्रस्तुत की गई है।

हिंदी दलित नाटक

हिंदी नाटक अन्य विधाओं की तुलना में एक अलगसी विद्या है। यह एक ही समय में दृष्य, श्राव्य और पठन तीनों रूपों में साकार की जाती है। आम्बेडकरवाद की दृष्टी से देखे तो मराठी भाषा का नाटयक्षेत्र जीतना समृध्द है हिंदी दलित नाटय साहित्य उतना समृध्द नहीं है। फिर भी आधुनिक युग के अनेक नाटयरचनाकार डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी के सैध्दांतिक विचारों को केंद्र में रखकर अपने नाटकों का सृजन करते हुए दिखाई देता है। मानो "वर्षों से चली आ रही वर्णवादी व्यवस्था से उत्पन्न जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, धार्मिक कट्टरता पर तार्किक ढंग से प्रहार करना उनका भी मुख्य

लक्ष्य है।"**7** इसी लक्ष्य की पूर्ति के उद्देश्य को सामने रखकर हिंदी नाटयक्षेत्र में कुछ प्रभावशाली नाटयकृतियों की रचना हुई दिखाई देती है। जैसे– "बाढ का पानी"–शंकर शेष। "कोर्ट मार्शल", "सबसे उदास कविता"– स्वदेश दिपक।, "तडप मुक्ति की"– माताप्रसाद। "कठौती में गंगा"– डॉ. एन. सिंह।,"लडाई"– प्रताप सहगल। "कह रैदास खलास चमारा"– राजेश कुमार। "प्रतिशोध", "धर्मपरिवर्तन", "वीरांगणा झलकारी बाई"– माताप्रसाद।, "मार्ग का कॉटा"– श्री. एन.आर.सिंह।, "अदालतनामा"– मोहनदास नैमिशराय।, "पंच बने यमराज"– कर्मशील भारती।, "इतिहास की पहली घटना"– रघुवीर सिंह 'अरविंद'।, "शम्बूक वध"– लल्लन सिंह यादव। "दो चहरे"– ओमप्रकाश वाल्मीकी।, "जब रोम जल रहा था","नीरो बंशी बजा रहा है"–कवंल भारती।, "हेलो कामरेड", "क्या तू खरीदोगे"– मोहनदास कैमशिराय। आदि।

हिंदी दलित कविता

दलित कविता लिखने की परंपराहिंदी में बहुत पुरानी है एसा माना जाता है। क्योंकि मध्यकालिन संत कवियों से लेकर स्वामी अछुतानंद हरीहर तक अनेक रचनाकारों ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से दलितों पर होनेवाले अत्याचार का वर्णन किया हुआ दिखाई देता है। किंतु उनके द्वारा किया गया यह वर्णन याचना और आक्रोशभरा अधिक है। केवल कबीर जैसे कुछ संतकवियों के दोहों में व्यवस्था परिवर्तन के विद्रोहात्मक स्वर सुनाई देता है। इसमें किसी भी तरह की दो राय नहीं है। शायद यही कारण है कि आम्बेडकरवादी विचारों को केंद्र में रखकर कविता लिखनेवाले आधुनिक युग के रचनाकारों की काव्यकृतियॉ उसी परिवर्तनवादी विद्रोहात्मक स्वर की विरासत लगती है। अर्थात आज तक हमारा समाज जिस अन्यायकारक विषमतावादी व्यवस्था से पीडीत रहा है। उसका विद्रोही स्वर इन कविताओं में उभरा हुआ दिखाई देता हैं। यह कविताऍ सदियों से जो अन्याय हो रहा है उसकी अभिव्यक्ति का सत्य कथनात्मक प्रमाण है। इसका स्वर आक्रोश और वेदना से भरा है और इस में वर्णव्यवस्था से उत्पन्न शोषण को व्यक्त किया गया है। डॉ.राजेंद्र मिश्रा जी के अनुसार "समूची दलित कविता अस्वीकार और प्रतिरोध की कविता है हिंदी की दलित कविता में मुक्ति की चाहत के साथ ही यातनाओं का हिसाब चुकाने की भी चाह है।"**8** अर्थात प्रचलित विषमतावादी व्यवस्था उध्वस्त करके समताधिष्ठित व्यवस्था निर्माण करने के लिए आम्बेडकरवाद में जितने भी सारे मूल्यधारित उपचार दिए गए है उन सभी सैध्दांतिक मानवतावादी विचारों को आत्मसात करके हिंदी दलित कवियों ने अपनी कविताऍ अलग–अलग काव्यसंग्रहों में प्रस्तुत की है। जैसे– "सुनो ब्राम्हण"– मलखान सिंह।, "आग और आंदोलन", "सफदर का बयान"– मोहनदास नैमशिराय।, "सदियों के संताप","बस्स बहुत हो चुका"– ओमप्रकाश वाल्मीकी। "यातना की ऑखे"– दयानंद बटोही।, "आम्बेडकर की कविताऍ"– कवंल भारती।, "टुकडे टुकडे दस"– कुसुम वियोगी।,"गुंगा नहीं था मैं"– जयप्रकाश कर्दम।, "मैं क्रौंच हूं"– श्यौराजसिंह बेचैन। "सवालों का सूरज", "दखल देती कविता"– पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी। "दलितों में दलित"– हरिकिशन संतोषी। "क्यों विश्वास करू कब होगी भोर"– सूरजपाल। "नियती नहीं है यह मेरी"– सुदेश तन्वर।, "खामोश नहीं हूँ मै"– असंग घोष।, "कील के कॉटे"– डॉ. रामशिरोमणी होरिल।, "भीम सागर" लक्ष्मीनारायण सुधाकर।, "रोटी की भूख"–डॉ. प्रेमशंकर।, "मूक नहीं मेरी कविताऍ"– लालचंद राही।, "दलित मंजरी"– कर्मशील भारती।, "दलित पचासा"– मंसाराम विद्रोही।, "भीम कथामृतम"– रामदास निमेश।, "एकलव्य और अन्य कविताऍ"– डॉ. श्यामसिंह शशि।, "सिंधु घाटी बोल उठी"– डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर।, "सदियों के बहते जख्म"– दामोदर मोरे।, "स्वाती बूँद और खारे मोती", "हमारे हिस्से का सूरज"– सुशीला टाकभौरे। इन सभी काव्यसंग्रहों में संग्रहीत एक एक कविता आम्बेडकर वादी विचारधारा का सबसे अधिक सशक्त स्वर लगती है। जिससे ऐसा लगता है कि यह सारी हिंदी दलित कविताऍ सामाजिक संदर्भो से जुडकर परिवर्तन की क्रांती करने के लिए सबको आवाहन करती है। यह

अवाहन दिन–प्रतिदिन हिंदी में प्रस्थपित दलित कवि अपनी नयी नयी रचनाएँ प्रस्तुत करके तो कुछ नये कवि अपनी नयी अनुभूती द्वारा हिंदी दलित काव्यक्षेत्र में प्रस्तुत कर रहें है।

हिंदी दलित समीक्षा साहित्य

इस साहित्य क्षेत्र में आम्बेडकरवादी विचारों ने अपनी पहचान बनाना शुरू किया हुआ दिखाई देता है। वैसे तो आज के वर्तमान युग में पढी–लिखी दलित युवा पीढिअब अलग–अलग उपाधियों की प्राप्ती के लिए संशोधन कार्य करके इस क्षेत्र को काफी समृध्द बना रही है। इसमें किसी भी तरह का विवाद नहीं है। फिर भी अन्य विधाओं की तुलना में तथा इसके निर्मिती प्रक्रिया में दिखाई देनेवाली अपूर्णता के कारण हिंदी दलित समीक्षा उपनी प्रभावात्मक पहचान नहीं बना सकी है जितनी अब तक बनाना जरूरी था। इसका कारण है – इस साहित्य का लेखक कौन? दलित या गैर दलित? इसी बात को प्रमाणित करने में इस क्षेत्र के विद्वान समीक्षकों ने अपना अधिक समय बरबाद किया हुआ दिखाइ देता है। इस स्थिती में भी कुछ समीक्षकोंने अनेक श्रेष्ठतम दलित साहित्य की समीक्षा की रचनाएँ निर्माण की है। इस दृष्टी से देखे तो "दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र" इस संम्मध में लिखी गई शरणकुमार लिंबाळे और ओमप्रकाश वाल्मीकी की समीक्षाओं का उल्लेख किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त व्यावहारीक समीक्षा में "दलित पत्रकारिता पर आम्बेडकर का प्रभाव"– श्यौराज सिंह बैचेन।, "स्वतंत्रता संग्राम के दलित क्रांतिकारी"– मोहनदास नैमशिराय।, "हिंदी उपन्यासों में दलित वर्ग"– डॉ. कुसुम मेघवास। "हिंदी साहित्य में दलित आंदोलन"– डॉ. नंदकुमार बरठे।, "हिंदी–गुजराती दलित उपन्यास"– डॉ. गिरीश कुमार रोहित।, "नवें दशक की हिंदी दलित कविता"– रजत रानी मीनू।,"भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना"– संपा. डॉ. धनंजय चौहान। "इक्कीसवी सदी का दलित साहित्य"– डॉ.भारत सगरे।, "हिंदी साहित्य में दलित अस्मिता"– डॉ. कालिचरण स्नेही।, "डॉक्टर आम्बेडकर और भारतीय साहित्य"–प्रा दामोदर मोरे।, "दलित साहित्य चिंतन में दलित चेतना"– डॉ. एन.सिंह। यह कुछ उदाहरणात्मक उल्लीखित किए गए समीक्षा ग्रंथ है। आजकल इस तरह के अनेक समिक्षात्मक ग्रंथ हिंदी दलित समीक्षा के क्षेत्र में दाखील हो रहे है।

इन गद्य पद्य साहित्यीक विद्याओं के अतिरिक्त अनेक पत्र पत्रिकाएँ तथा त्रैमासिक और वार्षिक पत्रिकाएँ ऐसी है जो आम्बेडकरवाद और हिंदी दलित साहित्य पर चर्चा करने हेतु प्रकाशित की जाती है। "बयान", "दिशा", "आश्वस्त". "दलितायन", "युध्दरत आदमी" आदी। इन सभी पत्रिकाओं में तथा अन्य अनेक पत्रिकाओं के विशेष अवसर पर प्रकाशीत किएजानेवाले अंकों में हिंदी दलित साहित्य पर तथा आम्बेडकरवाद वर खुब चर्चा की जाती है। जो हिंदी दलित साहित्य के समृध्दी की दृष्टी से अत्यंत महत्वपूर्ण मानकर साहित्यिक संदर्भ की दृष्टी से स्वीकारी जाती है।

सारांश

अंतः संक्षेप में आम्बेडकरवादी हिंदी दलित साहित्य के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि यह साहित्य दलित पीडित भारतीय जनमानस के आक्रोश का साहित्य है। सदियों से जिनपर जानवरों जैसा अन्याय किया, वैसा ही उनके साथ व्यवहार किया गया था। मानव होकर भी गुलाम बनाकर उनपर मनमाने अत्याचार किए गए थे। उसे धर्मग्रंथों के झूठे आधारपर बहिष्कृत, अस्पृश्य किया गया था। उसके सारे समाज को ही अछूत मानकर उसके साथ घिनौना व्यवहार किया गया उस दलित व्यक्ति सहित सारे दलित, अस्पृश्य समाज के नारकीय पीडा का, सदियों से दबाए गए आक्रोश का है यह दलित साहित्य। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी के विचार प्रणाली के प्रभाव से जागृत हुए दलित स्वाभिमान की गाथा है यह दलित साहित्य। जिसमें केवल याचना, न्याय की तडप या गीडगीडाहट नहीं है तो इसमें अपने हक और अधिकार प्राप्ती की चर्चा भी है। इसमें अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित करनेवाले आम्बेडकरवाद के सैध्दांतिक मूल्यों की स्थापना की हुई दिखाई देती है। जाति अंत की लडाई

के लिए संघर्ष की प्रेरणा देनेवाला आम्बेडकरवाद हिंदी दलित साहित्य के माध्यम से समकालिन व्यवस्था में समता, स्वातंत्र,बंधुता और न्याय, अहिंसा, शांति और मैत्रीभाव जैसे संविधानिक मूल्यों का प्रचार प्रसार करके विवेकवादी व्यक्ति और विज्ञानवादी समाज की निर्मिती करने के लिए प्रयत्नशील रहा दिखाई देता है। हिंदी दलित साहित्य में आम्बेडकरवाद में नीहित इन सारे मूल्यों का प्रतिबिंब अत्यंत स्पष्टतासे प्रतिबिंबित हुआ दिखाई देता है। किंतु यह काफी नहीं है क्योंकी डॉ. बाबासाहब आम्बेडकरजी ने मानव जीवन और राष्ट्र जीवन से संम्मंधित अनेक पहलूओं पर गहरा चिंतन करते हुए विकासात्मक, परिवर्तनात्मक और न्यायपूर्ण मूल्यों की स्थापना की है जिनकी ओर अभी तक हिंदी दलित साहित्यकारों ने ध्यान नहीं दिया। जैसे कि वैश्वीकरण, जलवितरण, नीजिकरण, अर्थनियोजन, इतिहास लेखन, निपक्ष पत्रकारिता, स्त्रीयों के अधिकार, धम्मक्रांति और विश्वशांति आदी। हमे विश्वास है कि हिंदी दलित साहित्यकार आम्बेडकरवाद में स्थापित इन सारे सैध्दांतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर भविष्य में अपने साहित्यीक रचनाओं की निर्मिती करके हिंदी दलित साहित्य को सबसे सशक्त, परिपूर्ण और समृध्द बनायेगा।

संदर्भ सूची

1) दर्शन– दिग्दर्शन पंडित राहुल सांकृत्यायन पृ. 514
2) आम्बेडकरवादी मराठी साहित्य डॉ. यशवंत मनोहर पृ. 20
3) दलित साहित्य– 2012 संपा. कर्दम) प्रो दामोदर मोरे पृ. 08
4) त्रैमासिक अक्टूबर2006 पृ. 41
5) संचारिका प्रैमासिक अक्टुबर 2006 पृ.26
6) भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना (संपा) डॉ. दयाशंकर पृ.4
7) दलित समस्या और हिंदी के प्रयोगधर्मी नाटक– डॉ. नामदेव पृ. 60
8) साहित्य की वैचारिक भूमिका – डॉ. राजेंद्र मिश्र पृ. 232